**HISTORY**

**B.A.PART-I (Hons)**

**Paper-II (The Rise of Modern west)**

**Unit-I, (Causes of The Reformation Movement)**

**Dr. GUDDY KUMARI**

**(Guest Lecturer), History Deptt.**

**A.N.D. College, Samastipur**

**Lecture Series - 69**

# "धर्म सुधार आंदोलन के कारण"

# (CAUSES OF THE REFORMATION MOVEMENT)

शताब्दियों से अनेक ऐसे कारण एकत्रित हो रहे थे जिनका संयुक्त परिणाम धर्म सुधार आंदोलन हुआ। मूल रूप में धर्म सुधार आंदोलन का उद्देश्य कैथोलिक चर्च में सुधार करना था। लेकिन इसमें राजाओं के समर्थन तथा नवोदित पूंजीगत वर्ग की आकांक्षाओं ने इसे राजनीतिक और आर्थिक स्वरूप दे दिया जिससे चर्च का विघटन अवश्यंभावी हो गया।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

16वीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप में जर्मनी में विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में धर्मविद्या के प्राध्यापक लूथर ने कैथोलिक धर्म में सुधार की माँग की। लूथर को जिस शीघ्रता से जर्मनी में समर्थन प्राप्त हुआ और लूथर के धार्मिक विचारों को यूरोप के अन्य राज्यों में स्वीकार किया गया। इससे स्पष्ट होता है कि कैथोलिक चर्च के विरुद्ध व्यापक असन्तोष था। धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कारण इस असन्तोष के लिए जिम्मेदार थे।

**धार्मिक कारण (Religious Causes)**

(1) पोप का अनैतिक तथा भ्रष्ट जीवन- पोप की लौकिक सत्ता या उसका राज्य धर्मसुधार आन्दोलन का कारण था। उसकी लौकिक सत्ता का यूरोप में व्यापक विरोध था क्योंकि वे अपनी धार्मिक सत्ता को साधन बनाकर अपनी लौकिक सत्ता में वृद्धि कर रहे थे। पोप के प्रति उसके अनैतिक जीवन तथा सांसारिकता के कारण आदर कम होता जा रहा था। उनका जीवन विलासिता से पूर्ण था। अत: यूरोप में बहुत से ऐसे ईसाई थे जो पोप के भ्रष्ट और अनैतिक जीवन की आलोचना करते थे लेकिन पोप की सत्ता निरंकुश होने के कारण वह आलोचकों को कठोर दण्ड

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

देता था। उसकी यह निरंकुश सत्ता उसके दो विशेषाधिकारों पर आधारित थी-प्रथम, इन्टरडिक्ट का अधिकार अर्थात् पोप किसी भी देश के एक या समस्त गिरजाघरों को बन्द करने का आदेश दे सकता था।

द्वितीय, एक्स कम्यूनिकेशन का अधिकार अर्थात् पोप को किसी व्यक्ति या राजा को चर्च से बहिष्कृत कर देने का अधिकार था। उस राजा को इस स्थिति सिंहासन त्यागना पड़ता था। बहिष्कृत व्यक्ति को जीवित जला दिया जाता था। पोप के निरंकुश अत्याचार के लिए ये दोनों अधिकार साधन बन गये।

(2) पादरियों में भ्रष्टाचार : चर्च के दोष- पोप का भ्रष्टाचार, सांसारिकता तथा अनैतिकता उसके दरबार तक सीमित ना हो कर संपूर्ण ईसाई जगत में व्याप्त थी। चर्च के पदाधिकारी बिशप, पादरी अपने धार्मिक कर्तव्यों की उपेक्षा करते थे तथा भोग-विलास में लिप्त रहते थे। वे राजनीति में भाग लेते अत्याचारों से धन वसूल करते तथा इन्द्रिय सुखाों में उसे व्यय करते। समान्य जनता इन पदाधिकारियों के भ्रष्ट जीवन के कारण उनसे घृणा करती थी। इस प्रकार चर्च की पहली बुराई पादरी वर्ग का भ्रष्टाचार था। गिरजाघर अनाचार के केन्द्र बन गये थे।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मठों में भिक्षुओं और भिक्षुणियों का रहना इस अनाचार का एक कारण था। जीन पर कोई प्रतिबंध या अनुशासन नहीं था। चर्च में बुराई का दूसरा कारण धन की लिप्सा थी। इसके लिए प्लूरेलिटीज की परम्परा का भी दुरुपयोग किया जाता था। इसके अनुसार आवश्यकता होने पर असाधारण कारणों से एक पादरी कई गिरजाघरों का अध्यक्ष या कई पदों पर रह सकता था। अब पादरी वर्ग अधिक से अधिक धन प्राप्त करने के लिये कई पदों को प्राप्त करने लगा क्योंकि प्रत्येक पद का पृथक् वेतन तथा आय प्रदान की जाती थी।

(3) जनसाधारण के धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन- जनसाधारण के धार्मिक दृष्टिकोण में चर्च में बढ़ते हुए अनाचार तथा सांसारिकता के कारण परिवर्तन हो रहा था। उनकी पोप और पादरियों में श्रद्धा कम हो रही थी। तीर्थ यात्रा करना या कल्याणकारी कार्यों; जैसे- अस्पताल और आश्रमों का निर्माण, दान करने में अधिक विश्वास रखते थे। धार्मिक पुस्तके छापेखाने के कारण अब जनसाधारण को प्राप्त हो रही थी जिससे उन्हें सच्चे धर्म का स्वरूप ज्ञात हो रहा था।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

(4). पुनर्जागरण का प्रभाव-लोगों के धार्मिक दृष्टिकोण में पुनर्जागरण के कारण भी परिवर्तन हो गया था। वे अब अन्धविश्वासों को स्वीकार करने के स्थान पर बौद्धिक आधार पर धर्म को स्वीकार करना चाहते थे। पुनर्जागरण का दूसरा प्रभाव था कि लोगों में भौतिकवादी विचारों का उद्भव हो रहा था। चर्च के प्रति उनकी उदासीनता बढ़ रही थी और अब आर्थिक तथा राजनीतिक मामलों में उनकी अधिक रुचि थी।

(5). चर्च में सुधार की असफलता- कैथोलिक चर्च का विघटन करना किसी भी धर्मसुधारक का उद्देश्य नहीं था। उनकी इच्छा थी कि चर्च को एक धार्मिक और पवित्र संस्था का रूप प्रदान किया जाये। वे शान्तिपूर्ण सुधार के पक्ष में थे। जब उनके सभी शान्तिपूर्ण प्रयास असफल हो गये, तब मार्टिन लूथर को विद्रोह का मार्ग अपनाना पड़ा।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

**आर्थिक कारण (Economic Causes)**

कैथोलिक चर्च में धार्मिक दोषों के साथ-साथ आर्थिक दोष भी उत्पन्न हो गये थे। चर्च के विरुद्ध सबसे बड़ा दोष यह था कि

जनता का पोप के दरबार में अधिक से अधिक आर्थिक शोषण किया जा रहा था, जनता पर अधिक से अधिक कर लगाये जा रहे थे| अतः आर्थिक कारणों का भी धर्म सुधार आन्दोलन में व्यापक प्रभाव था।

ये आर्थिक कारण निम्नलिखित थे:-

(1) वेनीफाइस या निर्वाह क्षेत्र- चर्च की परम्परा के अनुसार चर्च के प्रत्येक पदाधिकारी को निर्वाह के लिए क्षेत्र प्रदान किया जाता था। इसे बेनीफाइस कहते थे। इस परम्परा ने भी भ्रष्टाचार का रूप ले लिया। अपने अधिकार में एक अधिकारी कई बेनिफाई से रखता था और दूसरे बेनिफाईशो पर अपने संबंधियों की नियुक्ति कर देता था। सभी देशों में पोप ने बहुत से बेनिफाईसे रिजर्व में रख ली थी जिन्हें वह अपनी प्रिय पात्रों को प्रदान करता था। उसके ये प्रिय-पात्र उसके दरबार में रहते थे और अपनी बेनीफाइस से आय प्राप्त करते थे। जब भी पोप किसी को बेनीफाइस प्रदान करता था, तब वह पोप को पहले वर्ष की आय देता था। इसे अन्नेट कहते थे।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

(2) चर्च के विभिन्न कर- कैथोलिक चर्च अत्यधिक धनी संस्था थी। चर्च के स्वामित्व में यरोप के विभिन्न राज्यों में विशाल भूक्षेत्र थे। उसकी आय के भी अनेक साधन थे। प्रत्येक राज्य में विभिन्न करों से चर्च को नियमित आय होती थी/आय के इन सोतो में अन्नेट, बेनीफाइस की आय, पीटर पेंस, फार्स्ट फ्रूट, टाइथ थे। विशपों से पोप को भेंट के रूप में आय प्राप्त होती थी। अनेक सामन्ती कर थे जिन्हें चर्च वसूलता था। चर्च को तीर्थ यात्राओं, धार्मिक न्यायालयों की फीस से आय होती थी। इस प्रकार चर्च पश्चिमी यूरोप के प्रत्येक राज्य में सबसे बड़ा भूस्वामी था। इसके अतिरिक्त चर्च को इन राज्यों से बड़ी मात्रा में धन होता था। इस धन का बड़ा भाग पोप को भेज दिया जाता था।

(3). क्षमा-पत्रों को बेचना- चर्च में आर्थिक भ्रष्टाचार की चरम परिणति क्षमा-पत्रों के विक्रय में दिखाई दी। ईसाई धर्म के अनुसार पोप इस प्रकार के आश्वासन देता था कि उन व्यक्तियां को, जिन्होंने पाप का प्रायश्चित कर लिया हो, ईश्वर क्षमा कर देगा। इससे लोगों में यह विश्वास उत्पन्न किया जाता था कि प्रायश्चित करने तथा पुण्य करने से पाप से मुक्ति मिल जाती

Dr Guddy kumari (A N D College)

थी। इससे धनी व्यक्ति इस प्रकार की क्षमा आश्वासन को प्राप्त करने के लिये पोप को धन देने लगे। इससे धीरे-धीरे पोप की विलासिता बढ़ती गई, उसी अनुपात में उनकी धन की आवश्यकता भी बढ़ती गई। अब क्षमा-पत्रों का विक्रय होने लगा। इस प्रकार एक धार्मिक कार्य भ्रष्टाचार का स्रोत बन गया।

**राजनीतिक कारण (Political Causes)**

धार्मिक व्यक्तियों ने धर्म सुधार के आन्दोलन की प्रेरणा दी थी जो पवित्रता और धर्मप्रवणता, सदाचार, त्याग आदि गुणों के आधार पर चर्च का सुधार करना चाहते थे लेकिन शीघ्र ही धर्म सुधार आन्दोलन अनेक राजनीतिक कारणों से एक राजनीतिक आन्दोलन भी बन गया। नवीन परिस्थितियों के आधार पर इन राजनीतिक कारणों का उदय हुआ।

(1) राष्ट्रीय राज्यों की स्वतंत्रता- मध्य युग में चर्च एक धार्मिक संस्था के साथ-साथ एक राजनीतिक संस्था भी थी। उसके अधिकारी आर्कबिशप, विशप, पादरी प्रत्येक राज्य में थे। चर्च कर लगाती थी, चर्च भूस्वामी थी। चर्च के न्यायालय थे। वस्तुत:

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

चर्च की स्थिति राज्य के अन्दर राज्य के समान थी। राजतन्त्र के दुर्बल होने तथा सामन्तों के संघर्षरत रहने के कारण मध्ययुग में यह व्यवस्था आवश्यक थी। अत: चर्च ही शान्ति और व्यवस्था की स्थापना के लिये एकमात्र माध्यम था लेकिन आधुनिक युग आरम्भ होते ही स्थिति बदल गई। राष्ट्रीय राज्यों की स्थापना हुई और निरंकुश राजतंत्र का उत्थान हुआ। अब शक्तिशाली राजा अपने राज्य में शांति-व्यवस्था स्थापित रखने में सक्षम थे। उनके राज्यों में चर्च और मठों की स्वतन्त्र सत्ता और अधिकार निरकुश राजाओं को सहन नहीं होते थे और एक विदेशी सत्ता (पोप) की आज्ञा का पालन करना भी वे अपने सम्मान के विपरीत समझते थे। अत: वे चर्च को राज्य के नियंत्रण में लाना चाहते थे इसके अतिरिक्त निरंकुश राजा अपने को संप्रभु मानते थे और अपनी ऊपर पोप की सत्ता या उसका हस्तक्षेप सहन करने को तैयार नहीं थी।

(2) मध्यम वर्ग का राष्ट्रीय दृष्टिकोण- बौद्धिक तथा व्यापारी वर्गों पर भी राष्ट्रीयता की भावना कर प्रभाव पड़ा था। पोप को धन भेजने का व्यापारी वर्ग विरोधी था और चर्च की चल-अचल सम्पत्ति को उत्पादक कार्यों में प्रयुक्त करना चाहता था। चर्च की

Dr Gunjan Kumari (A N D College)

संपत्ति पर भी राजाओं की दृष्टि थी और वे इसे राज्य की सम्पत्ति बनाना चाहते थे। पोप विदेशियों को विशप आदि पदों पर नियुक्त करता था। जिसका बौद्धिक वर्ग विरोध करता था। राष्ट्रवाद के प्रभाव के कारण वे चर्च को भी राष्ट्रवाद का अंग बनाना चाहते थे। राजा इन वर्गों के समर्थक थे क्योंकि उनकी राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों में इससे वृद्धि होती थी।

**तात्कालिक कारण (Present Causes)**

धर्मशास्त्रों के प्राध्यापक मार्टिन लूथर ने जर्मनी के विटेनबर्ग विश्वविद्यालय में 1517 ई. में चर्च की बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई। पश्चिमी यूरोप के देशों में पोप लियो दसम ने क्षमा-पत्रों को बेचने के लिये अपने प्रतिनिधि भेजे थे। रोम में वह सेट पीटर के विशाल गिरजाघर का निर्माण करा रहा था जिसके लिए उसे धन की आवश्यकता थी। जर्मनी के मेंज नगर में उसका एक प्रतिनिधि क्षमा-पत्रों को बेचने के लिये गया। जब वह विटेनबर्ग पहुँचा तो लूथर ने क्षमा-पत्रों के विक्रय का विरोध किया। उसने विटेनबर्ग के चर्च के द्वार पर 95 प्रश्नों की सूची अपने विरोध को प्रकट करने के लिये लगा दी और घोषणा की कि वह उन विषयों पर किसी से भी शास्त्रार्थ करने को तैयार

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

था। लूथर ने प्रश्नों की सूची को लैटिन भाषा में लिखा था। इसका शीघ्र ही जर्मन भाषा में अनुवाद हो गया और इसका प्रचार सारे जर्मनी में हो गया। इससे सारे जर्मनी में चर्च की आलोचना होने लगी। और इसी के साथ धर्म सुधार आन्दोलन आरम्भ हो गया।

धन्यवाद

Dr Guddy kumari (A.N.D College)